अध्याय III

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 भूमिका

3.2 न्यादर्श का चयन

3.2.1 न्यादर्श का विवरण

3.3 चर

3.4 उपकरण

3.5 प्रदत्तों का संकलन

3.6 सांख्यिकी का उपयोग

अध्याय III

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 भूमिका –

अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के लिये आवश्यक होता है कि शोध की एक व्यवस्थित रूप रेखा हो। इसमें प्रतिदर्श के चयन की अपनी भूमिका होती है। एक अच्छा तथा उपयोगी प्रतिदर्श संपूर्ण समास्टि का वास्तविक प्रतिनिधित्व करता है। प्रतिदर्श जितने अधिक सुद्रढ़ होंगे परिणाम उतने ही परिशुद्ध, वैध एवं विश्वसनीय होंगे। इसके बाद उपकरण तथा चयन प्रविधि महत्वपूर्ण होती है। जिसके आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्युरांत उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। प्रस्तुत अध्याय में शोध कार्य के संकल संपादन के लिये प्रतिदर्श प्रतिदर्शो का विवरण वत उपकरण प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय का वर्णन किया गया है।

3.2 न्यादर्श का चयन–

किसी भी अनुसंधान कार्य में प्रतिदर्श का चुंनाव एवं उसकी संख्या महत्वपूर्ण पहलू होता है। प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा का ध्यान रखते हुये प्रतिदर्श को उद्देश्य पूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है, एवं उसमें शोधकर्ता के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रतिदर्श का चयन दादरा एवं नगर हवेली केन्द्र शासित प्रदेश के शहरी तथा ग्रामीण स्कूल लिये गये हैं।

शोध की प्रतिदर्श की विशेषताएं निम्नलिखित है :–

1. इस शोध कार्य के अंतर्गत दो स्कूल से कुल 120 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।
2. प्रतिदर्श के रूप में कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों को चुना गया।
3. जिसमें से 117 विद्यार्थियों उपस्थित रहे है।
4. जिसमें 59 छात्र 58 छात्रायें उपस्थित रहे।
5. जिसमें से 58 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से और 59 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र से है।
6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थी इसलिये चुने गये कि इस स्तर पर लिंग–भेद के बारे में दृष्टिकोण विकसित हो जाता है।

तालिका क्रमांक– 3.2.1
न्यादर्श का विवरण

क्र.	स्कूल का नाम	क्षेत्र	प्रतिदर्शन का प्रकार	बालक	बालिकाएँ	कुल विद्यार्थी
1.	नरोली, शासकीय हाई सेकेण्ड्री स्कूल	ग्रामीण	उद्देश्य पूर्ण	30	28	58
2.	टोकरखाड़ा, शासकीय हाई सेकेण्डरी स्कूल (सिलवासा)	शहरी	उद्देश्य पूर्ण	29	30	59
	कुल विद्यार्थी			59	58	117

3.3 चर :–

शोध समस्या में निम्न चर है :–

1. आश्रित चर

लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन

2. स्वतंत्र चर

1. लिंग – छात्र/छात्रा

2. क्षेत्र – ग्रामीण/शहरी

3.4 उपकरण :–

शोधकर्ता द्वारा दो प्रकार के साधनों का विनियोग किया गया।

1. लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन चित्र :–

शोधकर्ता के द्वारा लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन के चित्रों के चार्ट बनाये गये। इस चित्र में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन में गृह कार्य एवं व्यावसायिक कार्य पर चित्र तैयार किये। ''कार्य–विभाजन परीक्षण'' के विकल्प स्पष्टीकरण लिंग–भेद कार्य–विभाजन चित्र में दिखाया गया।

इस चित्र का उपयोग छात्रों में कार्य–विभाजन संबंधित दृष्टिकोण निर्माण करने हेतु किया गया।

2. कार्य–विभाजन परीक्षण :–

शोधकर्ता के द्वारा लिंग–भेद पर आधारित बंध प्रश्नावली परीक्षण का निर्माण किया गया। अन्य शोधकर्ता द्वारा बनाये गये परीक्षण का भी पुनरावलोकन किया गया एवं उनमें से भी कुछ प्रश्न चयनित किये गये। परीक्षण को DMS स्कूल के पहले 10 बाद में 20 छात्रों पर किया गया। 57 प्रश्नों में से विश्लेषण के बाद एवं परीक्षण व पस्पिर्धा द्वारा अंतिम परीक्षण में 44 प्रश्नों को शामिल किया गया। कुछ प्रश्नों को छोड़ दिया गया। प्रत्येक प्रश्न में 3 विकल्प दिये गये है। इनमें से

एक सही है। प्रत्येक सही उत्तर का 3 अंक दिये गये है। इसलिए उच्चतम गुणांक यह 132 है।

तालिका क्रमांक– 3.4.1

कार्य–विभाजन परीक्षण में सम्मिलित किये गये घटक प्रश्न कमांक और प्रश्न का प्रतिशत प्रमाण।

	घटक	प्रत्येक घटक के प्रश्न कमांक	प्रश्न का प्रतिशत कमांक
1.	गृह कार्य–विभाजन	1,4,6,8,9,11,15, 17,13,19,21,23,	27.27%
2.	व्यावसायिक कार्य–विभाजन जन	2,3,5,7,10,12,14, 16,18,20,22,24	27.27%
3.	अर्थबोध कार्य–विभाजन	25,29,31,34	9.09%
4.	शिक्षा– विद्यालय संबंधि कार्य–विभाजन	28,32,36,42,40	11.36%
5.	लैगिंक पक्षपात	26,27,30,33,35, 37,36,39,41,43,44	25%

3.5 प्रदत्तों का संकलन :–

प्रदत्तों का संकलन प्रश्नावली की सहायता से समंको को इकठ्ठा किया गया। संबंधित स्कूल में समंको के संग्रह से पूर्व दो दिन तक पाया गया। समंको के संग्रह के उद्देश्य से प्रधानाध्यापक, शिक्षक एवं विद्यार्थियों को अवगत कराया गया।

परिस्थिति के अंतर्गत समंकों का संग्रह किया गया।

इसमें सुविधा को बढ़ाने कुर्सी, ब्लेक-बोर्ड थी ऐसी कक्षाओं में विद्यार्थियों को स्थानांतरित किया गया। बाद में विद्यार्थियों को चित्र बताये गये वह चित्र लिंग-भेद पर आधारित कार्य-विभाजन संबंधि थे। उसमें से कार्य-विभाजन संबंधि विद्यार्थीओं में दृष्टिकोण विकसित किया गया बाद में परीक्षण जो कि कार्य-विभाजन पर आधारित है, जिसमें तीन विकल्प दिये गये हैं। जिसमें कार्य-विभाजन संबंधित क्षेत्र जैसे गृह कार्य-विभाजन, व्यवसायिक कार्य-विभाजन, कार्य-विभाजन अर्थबोध, शिक्षा-विद्यालय संबंधि कार्य-विभाजित, लिंग-भेद पक्षपात आदि विषयों को सम्मिलित किया गया।

परीक्षण के प्रबंध के पहले विद्यार्थियों को अभिप्रेरित एवं मनोविज्ञान के दृष्टि से शोधकर्ता द्वारा तैयार किया गया एवं उनसे कहा गया कि उन्हें प्रत्येक प्रश्न को हल करना है। अनुत्तरीय के द्वारा समस्या निर्माण हो सकती है। विद्यार्थियों को यह बताया गया कि यह प्रक्रिया पूर्णतः उनके स्कूली उपलब्धि से भिन्न है एवं उनकी बुद्धिक्षमता का मापन नहीं करती है।

परीक्षण के पूर्व सूचनाएं लिखी गयी है उनको पढ़ने के लिए कहा गया एवं उदाहरण ब्लेक-बोर्ड पर निर्देशित किया गया ताकि विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त हो की उनको क्या करना है एवं विद्यार्थियों को यह भी बताया गया कि परीक्षण में 45 मिनिट का समय दिया गया है।

परीक्षण के अंत में शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों के सहयोग के लिए अभार माना गया।

चयन इस प्रकार से किया गया कि जिसमें प्रत्येक प्रश्न की संभवता समान है। यदि हमारे प्रतिदर्श का विश्व समान है, तब चयन पूर्णतः वैकल्पिक हो जाता है। समंको को दो स्कूल से छात्र-छात्राओं से अध्ययन के लिए संग्रहित किया गया जिसमें:-

1. नरोली, शासकीय हाई सेकेण्ड्री स्कूल।
2. टोकरखाड़ा शासकीय हाई सेकेण्ड्री स्कूल, सिलवासा

3.6 सांख्यिकी का उपयोग :-

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्य मानक विचलन 't' प्राप्तांक का प्रयोग किया गया।